महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
जनसंपर्क कार्यालय
PUBLIC RELATIONS OFFICE

हिंदी विश्वविद्यालय में त्रिदिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ शुभारंभ
भारत के विकास में सभी भारतीय भाषाओं का है योगदान : प्रो. कुमुद शर्मा

वर्धा, 8 जनवरी 2026: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा तथा उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित त्रिदिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. कुमुद शर्मा ने कहा

कि हिंदी और भारतीय भाषाओं के बीच कोई द्वेष नहीं है। सभी भाषाएँ एक-दूसरे के साथ मिलकर भारत के विकास में योगदान दे रही हैं। उन्होंने कहा कि आज हिंदी केवल भारत की राजभाषा ही नहीं, बल्कि एक अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में अपनी पहचान बना चुकी है। उन्होंने हिंदी और रामकथा पर किए गए वैश्विक शोध कार्यों का भी उल्लेख किया।

प्रो. कुमुद शर्मा ने संगोष्ठी की रूपरेखा और उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि त्रिदिवसीय कार्यक्रम में विभिन्न सत्रों के माध्यम से भारतीय भाषाओं की एकात्मता, साहित्यिक परंपरा और सांस्कृतिक विरासत पर विमर्श किया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भाषाई विवाद कभी नहीं रहा औरसभी स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी का सम्मान किया।

'भारतीय साहित्य में एकात्मता' विषय पर आयोजित संगोष्ठी का उद्घाटन कस्तूरबा सभागार में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. सुरेन्द्र दुबे, उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ने कहा कि यह संगोष्ठी भारतीय भाषाओं के महोत्सव का राष्ट्रीय उत्सव है। उन्होंने कहा कि भारत की संस्कृति की अभिव्यक्ति पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक समान रूप से होती है। कन्नड़, तमिल,

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत
ई-मेल/E-mail: pro.mgahv@hindivishwa.ac.in वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org
दूरभाष :+91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305

तेलुगु, मलयालम और उड़िया जैसी भाषाओं में भी संस्कृति के समान भाव मिलते हैं। उन्होंने कहा कि तमिल व्याकरण की रचना अगस्त्य मुनि ने की थी, जो उत्तर भारत से थे, लेकिन उन्होंने दक्षिण जाकर तमिल भाषा को समृद्ध किया। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारत में भाषाओं के बीच कभी कोई भेद नहीं रहा।

विषय प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए डॉ. अमृता दुबे, प्रधान संपादक, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ ने कहा कि हिंदी हमारी राजभाषा होने के साथ-साथ हमारी अस्मिता भी है। उन्होंने महात्मा गांधी का उल्लेख करते हुए कहा कि विविधताओं से भरे देश को

एक सूत्र में बाँधने के लिए एक संपर्क भाषा का होना आवश्यक है। उन्होंने हिंदी संस्थान द्वारा संपादित पुस्तकों की जानकारी देते हुए कहा कि संस्थान समाज में नई सृजनात्मक चेतना को बढ़ावा दे रहा है।

इस दौरान भदंत आनंद कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केंद्र के सहायक प्रोफेसर डॉ. कृष्ण चंद्र पांडेय की दो पुस्तकें 'संस्कृति विमर्श', 'रामकृष्ण परमहंस जीवन एवं उपदेश' तथा वाणी प्रकाशन से प्रकाशित 'समग्र भारतीय पत्रकारिता' के तीन खंडों का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर अरुण माहेश्वरी ने कुलपति प्रो. कुमुद शर्मा को खंड भेंट स्वरूप प्रदान किए।

संगोष्ठी का शुभारंभ माँ सरस्वती के फोटो पर पुष्प अर्पित कर एवंदीप दीपन के साथ किया।

कार्यक्रम का आभार ज्ञापन हिंदी साहित्य विभाग के सहायक अध्यापक डॉ. सुनील कुमार ने किया तथा मंच संचालन साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. अवधेश कुमार ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के प्राध्यापक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।